अँधेरे पथ का प्रकाश - स्वमान

➢➢ स्वमान

➳ _ ➳ हमारी अपनी पहचान

→ स्वयं के स्वरुप में स्थित होना

→ बाबा इस धरा पर सिर्फ हमें जगाने के लिए आया है ... हमें जागरण कराने आया है... हमें यह एहसास दिलाने आया है की मैं कौन हूँ ?

→ बाबा से कुछ मांगने की आवश्यकता नहीं... मांगना(चाहे लिकिक / अलोकिक) अर्थात भक्ति मार्ग... बाबा कहते हैं :- मांगो नहीं, मैंने दे दिया है... *ज्ञान / योग / तपस्या से खाली आत्मा मांगती है....*

➳ _ ➳ ब्राह्मण जीवन

→ शुरुआत :- मैं कौन हूँ ?

→ अंत :- मैं कौनसी आत्मा हूँ ?

➳ _ ➳ आत्मा की ज्योति जगाना

➳ _ ➳ सिवाए भगवान के, आज तक किसी और ने नहीं बताया की स्वमान क्या है ?

➳ _ ➳ दूसरों को भी उनके सत्य स्वरुप में देखना... यह अगला कदम है

→ अव्यक्त बापदादा :- जब जब तुम किसी के देह के देखते हो तो समझ लेना की पाप हो रहा है

→ अव्यक्त बापदादा :- जब जब तुम किसी को आत्मा देखते हो तो उसे स्वतः ही करंट मिलता है

➳ _ ➳ स्वमान की साधना करनी है

➢➢ स्वमान में स्थित होना

➳ _ ➳ सबसे पहले हमारे अवचेतन मन को स्वमान स्वीकार करवाने हैं...

→ पर क्योंकि उसमे हीनता के भाव भरे हुए हैं इसलिए अवचेतन मन स्वमान को स्वीकार नहीं करता

➳ _ ➳ स्वमान को बार बार रिपीट करना

→ Variety स्वमानो का अभ्यास कीजिये

➳ _ ➳ स्वमान का विस्तार करना

→ लिखना

→ चिन्तन

→ मनन करना

→ चर्चा करना

➳ _ ➳ योग में स्वमान का अभ्यास करना

→ उस सवरूप में स्वयं को स्थित करना

➢➢ स्वमान में स्थित होने के लाभ

➳ _ ➳ शरीर के भान से ऊपर उठते हैं

→ ऐसी स्थिति में महान कर्म का जन्म होता है

→ भूत प्रेत आत्माएं शक्तिशाली होती हैं क्योंकि उनका देह नहीं होता

➳ _ ➳ शक्तियां जमा होती हैं